प्रकाशकीय निवेदन – १९९३

धवला षट्खंडागम सिद्धान्त ग्रंथके प्रथम खंडकी छठी पुस्तक जीवस्थान–चूलिकाकी तृतीय आवृत्तिका पुनर्मुद्रण करनेमें हम आनंदका अनुभव करते हैं।

ब्र. सुश्री विद्युल्लता हिराचंद शहा, भूतपूर्व प्राचार्या, उमाबाई श्राविका विद्यालय तथा उपसंचालिका श्राविका संस्थानगर,, सोलापुर इन्होंने धवला ग्रंथकी इस छठी पुस्तकके पुनर्मुद्रणके लिए आर्थिक सहयोग देकर जिनवाणीकी सेवाका जो महान् आदर्श उपस्थित किया उसके लिए हम उनका हार्दिक अभिनंदन करते हुए उनके प्रति अनेकशः धन्यवाद प्रकट करते हैं।

इस ग्रंथका प्रूफ संशोधन कार्य जीवराज जैन ग्रंथमालाके संपादक पं. नरेन्द्रकुमार भिसीकर शास्त्री तथा सहाय्यक श्री. धन्यकुमार जैनी और मुद्रणकार्य अक्षय सर्व्हिसेस, पुणें इनके द्वारा संपन्न हुआ है। इनके सहयोगके लिए हम उनके प्रति आभार प्रदर्शित करते हैं।

रतनचंद सखाराम शहा
मंत्री